

‘सूक्ति’ का अर्थपरक एवं शास्त्रीय विश्लेषण

MKND nhfi dk dfv; kj

vfl 0 i kQs j fgUnh

jkt dh; LukrdkRrj egkfo | ky;] gehj i j

। सूक्ति :- ‘सूक्ति’ भाव को कलात्मक रूप से प्रस्तुत करने वाली शैली है। शैली वह पद्धति या विधि है जो लेखक को स्वतः स्फुरित या अर्जित चेष्टा, मुद्रा अथवा भांगिमा, शैली के मौलिक लक्षण है। इसलिए शैली को ही व्यक्ति कहा गया है। एक शैली को कहते हैं कि वह ‘Style is the man’ अर्थात् शैली ही व्यक्ति है।

। सूक्ति :- सूक्ति का अर्थ है कलात्मक रूप से प्रस्तुत करने वाली शैली है। शैली वह पद्धति या विधि है जो लेखक को स्वतः स्फुरित या अर्जित चेष्टा, मुद्रा अथवा भांगिमा, शैली के मौलिक लक्षण है। इसलिए शैली को ही व्यक्ति कहा गया है। एक शैली को कहते हैं कि वह ‘Style is the man’ अर्थात् शैली ही व्यक्ति है।

- सूक्ति वह शैली है जो लेखक को स्वतः स्फुरित या अर्जित चेष्टा, मुद्रा अथवा भांगिमा, शैली के मौलिक लक्षण है। इसलिए शैली को ही व्यक्ति कहा गया है। एक शैली को कहते हैं कि वह ‘Style is the man’ अर्थात् शैली ही व्यक्ति है।
- सूक्ति का अर्थ है कलात्मक रूप से प्रस्तुत करने वाली शैली है। शैली वह पद्धति या विधि है जो लेखक को स्वतः स्फुरित या अर्जित चेष्टा, मुद्रा अथवा भांगिमा, शैली के मौलिक लक्षण है। इसलिए शैली को ही व्यक्ति कहा गया है। एक शैली को कहते हैं कि वह ‘Style is the man’ अर्थात् शैली ही व्यक्ति है।
- सूक्ति का अर्थ है कलात्मक रूप से प्रस्तुत करने वाली शैली है। शैली वह पद्धति या विधि है जो लेखक को स्वतः स्फुरित या अर्जित चेष्टा, मुद्रा अथवा भांगिमा, शैली के मौलिक लक्षण है। इसलिए शैली को ही व्यक्ति कहा गया है। एक शैली को कहते हैं कि वह ‘Style is the man’ अर्थात् शैली ही व्यक्ति है।

। सूक्ति :- सूक्ति का अर्थ है कलात्मक रूप से प्रस्तुत करने वाली शैली है। शैली वह पद्धति या विधि है जो लेखक को स्वतः स्फुरित या अर्जित चेष्टा, मुद्रा अथवा भांगिमा, शैली के मौलिक लक्षण है। इसलिए शैली को ही व्यक्ति कहा गया है। एक शैली को कहते हैं कि वह ‘Style is the man’ अर्थात् शैली ही व्यक्ति है।

मि हि इडकज फ}xफि.क्र dj nrth gS tS s [khj ea fd"ke"KA l kfgR; dkj dk Hkko l p; h] tkxr eu vukfn dky l s thou ds vuHkkodks vej vfHk0; fDr inku djrk gA l fDr; ka ekuo fpruk dh अक्षय भण्डार है। भाषा की समाहार शक्ति के द्वारा कवि सूक्ति; ka dh Lej.kh; cuk nrk gA ; s , s l kj xfhkz कथन है जो मानव जीवन के व्यवहारिक पक्ष से सम्बन्ध रखते है। सत्पुरुषों की सूक्तियाँ ni jka dks txkus ds fy,] l R; &vl R; ds food के लिए, लोक कल्याण के लिए, जगत में शान्ति ds fy, vkj thou ea okLrfod rRo ds mins?k l s iORr gvk djrs gA**4 l fDr; k; thou dh okLrfod i fjfLFkr; ka dk eeLi"रि अनुभव है। सूक्तियों में मनीषियों के चितन, परीक्षण और कल्पना ds rRoka ds l kj Hkr l R; fufgr gkr's gA ; s l R; gh ekuo i Fk dks vkylfdr djrs gA

ल fDr* dk 0; Ri fRrijd vFkz% सूक्ति शब्द दो शब्दों से मिलकर बना gS ल fDr A ल mi l xl है। उक्ति शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत की धातु 'वच' से हुई है। वच से pjs 'Dr* iR; ; ds mijkUr 'b' iRiy लगकर उक्ति शब्द से व्युत्पन्न हुआ। 'सु' का शाब्दिक अर्थ है अच्छा और उक्ति का शाब्दिक अर्थ है कथन। अच्छा कथन। कतिपय l fDr dks परिभाषित करती है-

- ल fDr mRre mfDr ; k l Unj mDRk gA**5
- ल fDr dk rkri ; l ; fDr ; pr okD;] l Unj in] okD; vkfn gA⁶
- ल fDr perdkj i wKz okD; ; k l Unj mDRKA**7

ल fDr l kfgR; xxu ea nhl; eku mTtoy u{k= ds l eku gA budh vkHk ns?k vkj dky dh l dfr l hek ij , d l eku vkj , d j l jgusokyh gA⁸

i kskR; er %& og dk0; ftl ea dfo thou ds vuHkoka dk l kj prkouh ds : lk ea vfHk0; DRk gkrk gS ml s ge l fDr dgrs gA ल fDr dFkdkj dk y{; i kbd dk eukjatu djuk ugha] cYd ml ea bgykfd dd vkj i kykfd क जीवन का परिमार्जन और शोधन करना होता है। वह मानव प्रकृति dks ml ds foHkU l keftd vkj vk/; kfred l Ecl/kka dks l e>rk c>rk gS tc ml ds ekul ea cgqk fdl h l Ecl/k dk fo"ष कोण सामने आता है।⁹ शब्द-चमत्कार या अर्थ चमत्कार आदि से उपेत mfDr dks l वक्त कहते है। जहाँ शब्द चमत्कार के कारण कर्णहार होती है, वहाँ अर्थ- "चमत्कार आदि के कारण मस्तिष्क को भी प्रभावित करती है।"¹⁰ काव्य और सूक्ति में अन्तर स्पष्ट करते हुए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है -" जो उक्ति हृदय में कोई भाव जाग्रत कर दे, तो वह है dk0;] tks mfDr dFku ds <x ds vuBiu] jpuk ofp=;] pedkRdkj dfo ds Je ; k fui qkrk ds fopkj ea gh iORr dj} og gS l fDrA**11

डॉ श्याम सुन्दरदास का कथन है "सूक्ति या सुभाषित का अर्थ अच्छे कथन से है।"¹² ml gkaus l fDr; ka dks mins?k dh l kK nh gA l वक्तियाँ चिन्तामणि के समन सम्पूर्ण कष/ka dk fuokj.k dj आनन्द देने वाली है। मानवपयोगी जितनी ही वस्तुएं है, उनमें केवल सूक्ति ही श्रेष्ठ हैं यह सूक्ति रत्न ekuuh; g&

"सूभाषित रसस्याग्रे, सुधा भीता दिबंगता।

nk{kk Xykfueखीजाता, शर्करा चास्मतां गतां।"¹³

I UnHkz xDJFk I iph %&

- 1- I fDr I kxj dks'k %m0iD fgluh I LFkku y[kuÅ] ds vked[k eA
- 2- I fDr I kxj dks'k %m0iD fgluh I LFkku y[kuÅ] ds vked[k eA
- 3- I fDr I kxj dks'k %m0iD fgluh I LFkku y[kuÅ] ds vked[k I A
- 4- Kkuk.kb& m0iD I a Jh jek'kdj xdr i0 715
- 5- ukykUnk fo'gal शब्द सागर— सं श्री नवल जी पृ0 1483
- 6- vkn'f हिन्दी शब्द को'क & I a i a jkeplnz ikBd i` 543
- 7- o'gr fgluh dks'k & I 0 dkfydk id kn i0 5121
- 8- I fDr I kxj dks'k & Jh jkei.rki f=i kBh i0 713
- 9- fgluh I kfgR; dks'k & I 0 /khjlnz oekz i0 857
- 10- fgluh ea uhfrdk0; dk fodkl & MK0 jke Lo: Ik'kkL=h i0 18
- 11- dfork D; k g\ चिन्तामणि भाग (एक)—आचार्य राम चन्द्र शुक्ल 857
- 12- सतसई सप्तक —प्रस्तावना — का0 श्याम सुन्दर दास 68
- 13- सुभाषि रत्न भण्डार— पृ0 202
- 14- I fDr I kxj dks'k & jek'anker गुप्त पृष्ठ सं0 202
- 15- I fDr I kxj dks'k & jek'anker गुप्त पृष्ठ सं0 560
- 16- I fDr I kxj dks'k & jek'anker गुप्त पृष्ठ सं0 561
- 17- Kkue.My okY; ny] okjk.kl h] MKW gjno cknjh
- 18- dchj xDJFkoyh I k[kh 357
- 19- dkek; uh t; 'kdj id kn i0 89